|  |
| --- |
| 10. August |
| **Fest des heiligen Laurentius, Diakon, Märtyrer** |
|  Lesung: 2 Kor 9,6-10; Evangelium: Joh 12,24-26  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 786, 1-3 | Zieh an die Macht |
|  | GL 481, 1+4+5 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  | GL 548, 1-3 | Für alle Heil’gen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 714 | Ehre, dir Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 112, 1-2.5-9 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 61, 1 | Selig der Mensch |
|  | oder |  |
|  | GL 543, 1+2 | Wohl denen, die da wandeln |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Wer mir nachfolgt, wandelt nicht in der Finsternis,* |
|  | *sondern hat das Licht des Lebens.* |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 460, 1+2+4+5 | Wer leben will |
|  | GL 210 | Das Weizenkorn muss sterben |
|  | GL 187 | Wir weihn‘ der Erde Gaben |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 198 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 497, 1+5 | Gottheit tief verborgen |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 458, 1-4 | Selig seid ihr |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 773, 1+4 | Dich König, loben wir |
|  | GL 542, 1+4 | Ihr Freunde Gottes |